

॥ श्रीराधासेर्वेश्वरा विजयते ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीनिम्बार्क-जन्म कथा

भाषानुवादक

पं. वैष्णवदास शास्त्री

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

भविष्य पुराणान्तर्गत श्रीनिम्बार्क-जन्म कथा (सानुवाद)

भाषानुवादक -

पं० वैष्णवदास शास्त्री

सम्पादक--

पं० वासुदेवशरण उपाध्याय

प्रकाशक--

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यचार्यपीठस्थ शिक्षा समिति
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) जि० अजमेर (राजस्थान)

श्रीमद्भगवद् गीता जयन्ती

च० सं० २०६७

श्रीनिम्बार्कब्द ५१०७

चतुर्थवृत्ति

२०००

न्यौछावर

तीन रुपये

श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य

का

भविष्यपुराण वर्णित दिव्य चरित

श्रीसुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरुवरेण्य आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के पावन चरित का “भविष्यपुराण” में अनुपम वर्णन प्रतिपादित है। श्रीनिम्बार्क भगवान् के परम कृपापात्र-शिष्य श्रीऔदुम्बराचार्य प्रणीत “श्रीनिम्बार्क-विक्रान्ति पद्यात्मक संस्कृत ग्रन्थ में साङ्गोपाङ्ग वर्णन किया गया है जो परम द्रष्टव्य एवं मननीय है।

“श्रीभविष्य पुराण” में आद्याचार्यश्री का सूत्रात्मक संक्षिप्त किन्तु अनुपम चरित वर्णन हुआ है। स्वसाम्प्रदायिक अनेक ग्रन्थों एवं शोधकर्त्ताओं ने चरित वर्णन क्रम में श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य को परम प्राचीन निर्दिष्ट किया है। सम्प्रदाय की आचार्य परम्परानुसार भी आपश्री की अतीव प्राचीनता है। इसके अतिरिक्त प्राचीनता के अनेक उद्धरण शोध-प्रबन्धों में पर्याप्त है। अतः एतद्विषयक किसी प्रकार का सन्देह करना उचित नहीं।

श्रीनिम्बार्क भगवान् का दार्शनिक सिद्धान्त स्वाभाविक द्वैताद्वैत एवं उपासना वृन्दावननित्यनिकृञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण

भगवान् की है। एकादशी व्रत क्रम में कपालवेध सिद्धान्त ही प्रतिपादित किया है। आपका इस धाराधाम पर आज से ५१०६ वर्ष पूर्व का प्राकट्य काल है जो ऐतिह्य ग्रन्थों से प्रमाणित है।

“श्रीनिम्बार्क जन्म कथा” जो भविष्य पुराण में परिवर्णित है उसका प्रकाशन न्याय वेदान्त के विद्वन्मूर्द्धन्य पण्डितप्रवर श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री, वृन्दावन ने वि० सं० १९६४ से पूर्व ही हिन्दी अनुवाद करके करा दिया था। और उसके प्रकाशन की द्वितीयावृत्ति, तृतीयावृत्ति पं० श्रीगोविन्ददासजी ‘सन्त’ अजमेर ने अ० भा० श्रीनिम्बार्कचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय से कराई गई थी। अब पुनः चतुर्थावृत्ति के रूप में पुनः इसका प्रकाशन कराया गया है। विद्वज्जनों एवं भगवद्भक्तजनों को प्रस्तुत इस “श्रीनिम्बार्क जन्म कथा” के अनुशीलन से परम लाभान्वित होना अति श्रेयस्कर है।

श्रीभगवन्निम्बार्कचार्यचरणारविन्दमकरन्दभक्तिकामः-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

मिति- मार्गशीर्ष शुक्ल ११ शुक्रवार

वि० सं० २०६७

दिनांक १७ / १२ / २०१०

परिचय

वैष्णव चतुःसम्प्रदाय में श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय अति प्राचीन है। सुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का वर्णन भविष्य पुराण में मिलता है। पुराण में आपके आविर्भाव और प्रभाव का रोचक वर्णन है। इस प्रकरण का हिन्दी व्याख्या सहित “श्रीनिम्बार्क जन्मकथा” नाम से प्रकाशन हुआ है। उसका यह चतुर्थ संस्करण है। इसके व्याख्याकार पं० श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की विद्वत्परम्परा में अपने समय के माने हुए विद्वान् थे। व्याकरण, न्याय, वेदान्त आदि विषय के आप मर्मज्ञ मनीषी थे। आपने श्रीमद्भगवद् गीता की द्वैताद्वैत सिद्धान्त के अनुरूप हिन्दी में विस्तृत व्याख्या लिखी है। आचार्यपीठ की ओर से उसके प्रकाशन की व्यवस्था हुई है, यह ग्रन्थ सम्प्रदाय सिद्धान्त की जानकारी हेतु परम उपादेय होगा। इस संस्करण में श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य प्रणीत प्रातःस्तवराज, श्रीवेदान्त कामधेनु (दशश्लोकी), श्रीराधाष्टक एवं श्रीऔदुम्बराचार्य प्रणीत श्रीनिम्बार्क स्तोत्र भी संलग्न किये गये हैं।

शास्त्रीजी ने और भी अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें संस्कृत में “सिद्धान्त मन्दाकिनी”, “वैष्णव संस्कार कौस्तुभ”, “हंसपल्लीः” हिन्दी में “वेदान्त पदार्थ परिचय” नामक

(५)

पुस्तक प्रसिद्ध हैं। इन ग्रन्थों में स्वसम्प्रदाय सिद्धान्त के अनुसार पदार्थ परिचय एवं द्रव्यों का समन्वयात्मक वर्णन हैं। प्रस्तुत पुस्तक आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के जन्म और दिव्य चरित्रों का परिचायक है। जो सबके लिये पठनीय एवं मननीय है।

--वासुदेवशरण उपाध्याय निम्बार्कभूषण

व्या० सा० वेदान्ताचार्य

प्राचार्य-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

निम्बार्कतीर्थ- सलेमाबाद

दिनांक ५ / १२/ २०१०

निवेदन

निखिलभूमण्डलैकदेशिक चक्रचूड़ामणि सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र सुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यजी का आविर्भाव काल अति प्राचीन है। इनके आविर्भाव का समय द्वापर के अन्त का है। साम्प्रदायिक विद्वानों का यह कथन है कि--

धर्मभृतां वरिष्ठस्य युधिष्ठिरस्य भूभृतः ।

राज्यादुत्तरकालेऽभूद् वज्रनाभो नृपोत्तमः ॥

स शशास महाभागो मथुरामण्डले महीम् ।

तदा श्रीनिवासाचार्यो गुरुणां शरणं गतः ॥

धर्मराज श्रीयुधिष्ठिर के राज्यकाल के पश्चात् जब राजा वज्रनाभ मथुरा मण्डल का राज्य शासन कर रहे थे तब श्रीनिवासाचार्य श्रीनिम्बार्काचार्यश्री के शरणागत हुये थे।

यही बात स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज के निजमत नामक ग्रन्थ के आचार्यखण्ड में श्रीगुरु परम्परा के वर्णन में स्पष्ट उल्लेख है कि--

वज्रनाभ नृप की प्रभुताई । तब श्रीनिवास आयो शरणाई ॥

इसके अतिरिक्त भविष्य पुराण के एकादशी वेध विषयक-

उदयव्यापिनी ग्राह्या कुले तिथिरुपोषणे ।

निम्बार्को भगवान्येषां वाञ्छितार्थप्रदायकः ॥

इस श्लोक में “निम्बार्को भगवान्” यह आदर सूचक शब्द देने का भाव यही है कि श्रीवेदव्यासजी महाराज भी आपको पूज्य भाव से देखते थे।

हरि के प्रिय चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवतार होने से आपका नाम श्रीहरिप्रियाचार्य भी था। जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य श्रीभगवद्गीता के व्याख्यान की समाप्ति के मंगल में लिखते हैं कि--

व्याख्यातमादौ तददभ्रवोधादाचार्यवर्येण हरिप्रियेण ।

“ब्रह्मवैवर्तपुराण” के एकादशी वेध विषयक वचनों में श्रीशौनक ने कहा है कि--

अर्धरात्रे तु केषांचिद्दशम्या वेध इष्यते ।

कपालवेध इत्याहुराचार्या ये हरिप्रियाः ॥

इसी श्लोक को स्मार्त श्रेष्ठ सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीरामकृष्ण भट्टात्मज श्रीकमलाकर भट्ट ने “निर्णय सिन्धु” के एकादशी निर्णय में भी दिया है।

श्रीशौनक के कथन से यह बात स्पष्ट सिद्ध हो जाती है कि श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीशौनक से पूर्व विद्यमान थे।

भारतेन्दु बाबू श्रीहरिश्चन्द्रजी ने भी “वैष्णवता और भारत वर्ष” नामक प्रबन्ध में आपको उद्धव और परीक्षित के समकालीन बतलाया है।

इत्येवं वदन्ति जनजल्पनिर्भया एकमताः कुमारव्यास-
शुक-शाडिल्यगर्गविष्णुकौण्डिन्यशेषोद्धवारुणिवलि-
हनुमद्विभीषणादयो भक्त्याचार्याः ॥

“श्रीनारद-भक्ति-सूत्र” के इस ८३ वें सूत्र में देविर्षि नारद ने अरुण के पुत्र होने से “आरुणि” इस नाम से भक्ति के प्रधान आचार्यों में आपकी गणना की है।

इत्यादि कई एक वचनों से श्रीआचार्यचरणों के जन्म समय की प्राचीनता सिद्ध हो जाती है। अस्तु !

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदायानुयायी सर्वसाधारण वैष्णव बन्धुओं को भी श्रीनिम्बार्क जन्मकथा चरित्र का ज्ञान हो, इसी उद्देश्य से पं० प्रवर श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री ने भविष्यपुराणान्तर्गत इस “श्रीनिम्बार्क-जन्मकथा” का भाषानुवाद करके बहुत समय पूर्व प्रकाशन कराया था, जिसकी प्रतियाँ लुप्त प्रायः हो गई थी, अतः मैंने श्रीसर्वेश्वर प्रभु की परम कृपा से ५० वर्ष पूर्व उसे यथावत् प्रकाशित कराके भक्तों को वितरित की थी किन्तु अब वे प्रतियाँ भी पूर्ण हो चुकीं। अतएव अब पुनः इसका श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा प्रकाशन कराके भावुकजनों के समक्ष प्रस्तुत है। विद्वज्जन एवं वैष्णव महानुभाव इस “श्रीनिम्बार्क-जन्मकथा” से अवश्य ही लाभान्वित होंगे ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

निवेदक-

पं० गोविन्ददास ‘सन्त’ निम्बार्कभूषण
धर्मशास्त्री, द्वैताद्वैत विशारद, पुराणतीर्थ

प्रचारमन्त्री -

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य प्रणीत-

वेदान्तकामधेनु - दशश्लोकी

ज्ञानस्वरूपश्च हरेरधीनं

शरीरसंयोगवियोगयोग्यम् ।

अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं

ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः ॥१॥

अनादिमायापरियुक्तरूपं

त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात् ।

मुक्तश्च बद्धं किलबद्धमुक्तं

प्रभेदबाहुल्यमथापि बोध्यम् ॥२॥

अप्राकृतं प्राकृतरूपकश्च

कालस्वरूपं तदचेतनं मतम् ।

मायाप्रधानादिपदप्रवाच्यं

शुक्लादिभेदाश्च समेऽपि तत्र ॥३॥

स्वभावतोऽपास्त-समस्तदोष-

मशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।

व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं

ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ॥४॥

अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदा
 विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
 सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा
 स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम् ॥५॥
 उपासनीयं नितरां जनैः सदा
 प्रहाणयेऽज्ञानतमोऽनुवृत्तेः ।
 सनन्दनाद्यैर्मुनिभिस्तथोक्तं
 श्रीनारदायाखिलतत्त्वसाक्षिणे ॥६॥
 सर्वं हि विज्ञानमतोयथार्थकं
 श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः ।
 ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतं
 त्रिरूपताऽपि श्रुतिसूत्रसाधिता ॥७॥
 नान्यागतिः कृष्णपदारविन्दात्
 संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात् ।
 भक्तेच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहा-
 दचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यसाशयात् ॥८॥
 कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते
 यया भवेत्प्रेमविशेष लक्षणा ।
 भक्तिर्ह्यनन्याधिपतेर्महात्मनः
 सा चोत्तमा साधनरूपिकाऽपरा ॥९॥

उपास्यरूपं तदुपासकस्य च

कृपाफलं भक्तिरसस्ततः परम् ।

विरोधितोरूपमथैतदाप्ते -

ज्ञेया इमेऽर्था अपि पञ्च साधुभिः ॥१०॥

श्रीप्रातःस्मरण - स्तोत्रम्

अथ श्रीमदाद्याचार्य भगवन्निम्बार्क महामुनीन्द्रकृत प्रातःस्मरण-स्तोत्रम्

प्रातःस्मरामि युग-केलिरसाभिषिक्तं

वृन्दावनं सुरमणीयमुदारवृक्षम् ।

सौरीप्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशं

युग्माङ्घ्रिरेणुकणिकाञ्चितसर्वसत्त्वम् ॥१॥

प्रातःस्मरामि दधिघोषविनीतनिद्रं

निद्रावसानरमणीयमुखानुरागम् ।

उन्निद्रपद्मनयनं नवनीरदाभं

हृद्यानवद्यललनाञ्चितवामभागम् ॥२॥

प्रातर्भजामि शयनोत्थितयुग्मरूपं

सर्वेश्वरं सुखकरं रसिकेशभूपम् ।

अन्योन्यकेलिरसचिह्नसखीदृगौघं

सख्यावृतं सुरतकाममनोहरं च ॥३॥

प्रातर्भजे सुरतसारपयोधिचिह्नं

गण्डस्थलेन नयनेन च सन्दधानौ ।

रत्याद्यशेषशुभदौ समुपेतकामौ

श्रीराधिकावरपुरन्दरपुण्यपुञ्जौ ॥४॥

प्रातर्धरामि हृदयेन हृदीक्षणीयं

युग्मस्वरूपमनिशं सुमनोहरं च ।

लावण्यधाम ललनाभिरुपेयमान-

मुत्थाप्यमानमनुमेयमशेषवेष्टैः ॥५॥

प्रातर्ब्रवीमि युगलावपि सोमराजौ

राधामुकुन्दपशुपालसुतौ वरिष्ठौ ।

गोविन्दचन्द्रवृषभानुसुतौ वरिष्ठौ

सर्वेश्वरौ स्वजनपालनतत्परेशौ ॥६॥

प्रातर्नमामि युगलांग्रिसरोजकोश-

मष्टाङ्गयुक्तवपुषा भवदुःखदारम् ।

वृन्दावने सुविचरन्तमुदारचिह्नं

लक्ष्म्या उरोजधृतकुंकुमरागपुष्टम् ॥७॥

प्रातर्नमामि वृषभानुसुतापदाब्जं

नेत्रालिभिः परिणुतं व्रजसुन्दरीणाम् ।

प्रेमातुरेण हरिणा सुविशारदेन

श्रीमद्ब्रजेशतनयेन सदाऽभिवन्द्यम् ॥८॥

सञ्चिन्तनीयमनुमृग्यमभीष्टदोहं

संसारतापशमनं चरणं महार्हम् ।

नन्दात्मजस्य सततं मनसा गिरा च

संसेवयामि वपुषा प्रणयेन रम्यम् ॥९॥

प्रातःस्तवमिमं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।

सर्वकालं क्रियास्तस्य सफलाः स्युः सदा ध्रुवाः ॥१०॥

॥ सम्पूर्णम् ॥

श्रीराधाष्टकस्तोत्रम्

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै

नमस्ते नमस्ते मुकुन्द-प्रियायै ।

सदानन्दरूपे ! प्रसीद त्वमन्तः

प्रकाशे स्फुरन्ती मुकुन्देन सार्धम् ॥१॥

स्ववासोपहारं यशोदासुतं वा

स्वदध्यादिचौरं समाराधयन्तीम् ।

स्वदाम्नोदरे या बबन्धाशुनीव्या

प्रपद्ये नु दामोदरप्रेयसीं ताम् ॥२॥

दुराराध्यमाराध्य कृष्णं वशे तं

महाप्रेमपूरेण राधाऽभिधाऽभूः ।

स्वयं नाम कीर्त्या हरौ प्रेम यच्छ

प्रपन्नाय मे कृष्णरूपे समक्षम् ॥३॥

मुकुन्दस्त्वया प्रेमडोरेण बद्धः

पतङ्गो यथा त्वामनुभ्राम्यमाणः ।

उपक्रीडयन् हार्दमेवानुगच्छन्

कृपावर्तते कारयातो मयीष्टिम् ॥४॥

व्रजन्तीं स्ववृन्दावने नित्यकालं

मुकुन्देन साकं विधायाङ्गमालम् ।

समामोक्ष्यमाणाऽनुकम्पाकटाक्षैः

श्रियं चिन्तयेत्सच्चिदानन्दरूपाम् ॥५॥

मुकुन्दानुरागेण रोमांचिताङ्गैः-

रहं व्याप्यमानां तनुस्वेद-विन्दुम् ।

महाहार्दवृष्ट्या कृपापाङ्गदृष्ट्या

समालोकयन्तीं कदा त्वां विचक्षे ॥६॥

यदंकावलोकं महालालसौघं

मुकुन्दः करोति स्वयं ध्येयपादः ।

पदं राधिके ते सदा दर्शयान्त-

र्हृदिस्थं नमन्तं किरद्रोचिषं माम् ॥७॥

सदा राधिका-नाम जिह्वाग्रतः स्यात्

सदा राधिकारूपमक्ष्यग्र आस्ताम् ।

श्रुतौ राधिकाकीर्तिरन्तः स्वभावे

गुणा राधिकायाः श्रिया एतदीहे ॥८॥

इदं त्वष्टकं राधिकायाः प्रियायाः

पठेयुः सदैवं हि दामोदरस्य ।

सुतिष्ठन्ति वृन्दावने कृष्णधाम्नि

सखीमूर्तयो युग्मसेवानुकूला ॥९॥

श्रीमदाचार्यजगद्गुरुभगवन्निम्बार्काचार्य पादपद्माश्रित-

श्रीऔदुम्बराचार्य-- प्रणीतम्
श्रीनिम्बार्क -- स्तोत्रम्

श्रीमते सर्वविद्यानां प्रभवाय सुब्रह्मणे ।
आचार्याय मुनीन्द्राय निम्बार्काय नमो नमः ॥१॥

निम्बादित्याय देवाय जगज्जन्मादिकारिणे ।
सुदर्शनावताराय नमस्ते चक्ररूपिणे ॥२॥

नमः कल्याणरूपाय निर्दोषगुणशालिने ।
प्रज्ञानघनरूपाय शुद्धसत्त्वाय ते नमः ॥३॥

सूर्यकोटिप्रकाशाय कोटीन्दुशीतलाय च ।
शेषानिशिचततत्त्वाय तत्त्वरूपाय ते नमः ॥४॥

विदिताय विचित्राय नियमानन्दरूपिणे ।
प्रवर्तकाय शास्त्राणां नमस्ते शास्त्रयोनये ॥५॥

वसतां नैमिषारण्ये मुनीनां कार्यकारिणे ।
तन्मध्ये मुनिरूपेण वसते प्रभवे नमः ॥६॥

लीलां संपश्यते नित्यं कृष्णस्य परमात्मनः ।

निम्बग्रामनिवासाय विश्वेशाय नमो नमः ॥७॥

स्थापिता येन द्वार्वत्यां तप्तमुद्रा कलौ युगे ।

निम्बाकार्य नमस्तस्मै दुष्कृतामन्तकारिणे ॥८॥

य इदं पठते स्तोत्रं निम्बादित्यस्य बुद्धिमान् ।

तस्य क्वापि भयं नास्ति सूर्यस्य तमसीव तु ॥९॥



॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

भविष्यपुराणान्तर्गत-

श्रीनिम्बार्क-जन्म कथा

सूत उवाच-

श्रीसूतजी महाराज शौनकादि ऋषियों से नैमिषारण्य में कहते हैं कि--

शृणुष्व चरितं तस्य निम्बार्कस्य महात्मनः ।

यमाह भगवान् कृष्णः कुरु कार्यं ममाज्ञया ॥१॥

भा०-उन अनुपम महात्मा स्वरूप श्रीनिम्बार्का-चार्यजी का चरित्र सुनिये जिनको भगवान् श्रीकृष्ण ने यह कहा कि मेरी आज्ञा से यह कार्य करो ।

सुदर्शन ! महाबाहो ! कोटिसूर्यसमप्रभ ! ।

अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ॥२॥

भा०-भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे सुदर्शन ! हे महाबाहो ! हे कोटिसूर्यसमप्रभासम्पन्न ! अब तुम भूतल पर जाकर अज्ञान रूप अन्धकार से मोहित सांसारिक जीवों को वैष्णव धर्म का उपदेश करो ।

मेरोश्च दक्षिणे पाश्वर्णे देवनद्यास्तटे शुभे ।

देशे तैलङ्गके रम्ये देवर्षिवरसेविते ॥३॥

भा०-मेरु-पर्वत के दक्षिण भाग में परम पवित्र देव नदी (गोदावरी) के तट पर देव और ऋषियों से सेवित अति रमणीय तैलङ्ग देश में।

तत्रावतीर्य सद्धर्मान्नारदाद्देवदर्शनात् ।

लब्ध्वा भूमौ वर्तयस्व नष्टप्रायान्ममाज्ञया ॥४॥

भा०-वहाँ (उस तैलङ्ग देश में) अवतार लेकर श्रीनारदजी से दीक्षा प्राप्त करके प्रायः नष्ट हुए वैष्णव धर्म को हमारी आज्ञा से भूमि पर फिर प्रवृत्त करना।

माथुरे नैमिषारण्ये द्वारवत्यां समाश्रमे ।

सुदर्शनाश्रमादौ च स्थितिः कार्या त्वयानघ ! ॥५॥

भा०-मथुरा, नैमिषारण्य, द्वारका और सुदर्शन आदि क्षेत्रों में मेरा निवास स्थान है। हे निष्पाप ! आप इन स्थानों में ही निवास करेंगे।

ॐ मित्यादेशमादाय भगवाञ्छ्रीसुदर्शनः ।

भक्ताभीष्टप्रदः साक्षादवतीर्णो महीतले ॥६॥

भा०-जो आज्ञा ऐसा कहते हुए भगवान् की आज्ञा पाकर भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वाले भगवान् श्रीसुदर्शन

ने भूतल पर अवतार लिया ।

देशे तैलङ्गके पुण्ये द्विजवर्यो महामना ।

सुदर्शनाश्रमे पुण्ये भृगुवंशसमुद्भवः ॥७॥

नाम्नाऽरुण इति ख्यातो वेदवेदाङ्गपारगः ।

ऋषिरूपधरश्चासीञ्चयन्त्या भार्यया सह ॥८॥

भा०-परम पवित्र तैलङ्ग देश श्रीसुदर्शन क्षेत्र (वर्तमान में वही क्षेत्र पैठण निकटवर्ती गोदावरीतटीय “मूंगी ग्राम”) में ब्राह्मण जातीय भृगु वंश में उत्पन्न वेद वेदाङ्ग पारंगत श्रीअरुण ऋषि अपनी पत्नी जयन्ती देवी के साथ वहाँ निवास करते थे ।

समाहितं तेन तेजो विष्णुचक्रसमुद्भवम् ।

दधार मनसा देवी जयन्ती पतिदेवता ।

तेजसा शुशुभे तेन चन्द्रेणैव दिशामला ॥९॥

भा०-श्रीसुदर्शन तेज ने पहिले श्रीअरुण ऋषि के मन में प्रवेश करके फिर पतिव्रता श्रीजयन्ती के भीतर प्रवेश किया । उस सुदर्शन तेज को धारण करने से जयन्ती इस प्रकार शोभायमान होने लगी जैसे पूर्ण चन्द्रोदय से निर्मल पूर्व दिशा ।

अथ सर्वगुणोपेते काले परमशोभने ।



देवर्षि नारद द्वारा श्रीसनकादि सेवित श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्राप्त करते हुए श्री निम्बार्क भगवान्



श्रीवेदव्यास-प्रणीत "वृहत्सूत्र" पर "वेदान्त परिजात सारभ" नामक भाष्य
की रचना में तन्मय जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्कच्यार्य

कार्तिकस्य सिते पक्षे पूर्णिमायां वृषे बुधे ॥१०॥

कृत्तिकाभे महारम्ये उच्चस्थे ग्रहपंचके ।

सूर्यावसानसमये मेषलग्ने निशामुखे ॥११॥

जयन्त्यां जयरूपिण्यां जजान जगदीश्वरः ।

येन सर्वमिदं विश्वं वेदधर्मे नियोजितम् ॥१२॥

भा०-इसके अनन्तर परम शोभायमान सुन्दर समय के प्राप्त होने पर, कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा बुधवार, कृत्तिका नक्षत्र, वृष राशि, बृहस्पति आदि पाँच ग्रह उच्चके, सूर्यास्त समय गोधूली वेला, मेष लग्न में, जयन्ती माता से श्रीसुदर्शन चक्र ने भगवदाज्ञा से श्रीनिम्बार्क रूप से अवतार लिया जिन श्रीनिम्बार्कचार्य ने इस सम्पूर्ण विश्व में भगवद्विमुख जीवों को वैदिक धर्म में नियुक्त किया ।

विरञ्चिरेकदा तस्य निम्बार्कस्याश्रमे शुभे ।

समागत्याह भो ब्रह्मन् ! प्राप्तोहं क्षुद्यान्वितः ॥१३॥

यावत्सूर्यः स्थितो व्योम्नि तावन्मां भोजय द्विज ।

इति श्रुत्वा तथेत्युत्वा ददौ तस्मै च भोजनम् ।

तदातु भगवान् सूर्यो ह्यस्ताचलमुपागतः ॥१४॥

भा०- एक दिन ब्रह्माजी उनके पवित्र आश्रम पर सन्यासी का रूप धारण करके आये और कहने लगे कि हे ब्रह्मन् मैं भूख से पीड़ित हूँ। मैं सन्यासी हूँ अतः सूर्य

१-निम्ब (नीम) वृक्ष पर अर्क (सूर्य) के दर्शन कराने पर ब्रह्माजी ने आपका नाम निम्बार्क रख दिया। इसके पहिले आपका नाम श्रीनियमानन्द था।

तैलङ्ग देश वर्तमान में महाराष्ट्र में पैठण निकटवर्ती मूंगी ग्राम श्रीसुदर्शन क्षेत्र में अवतार लेकर देवर्षि श्रीनारद जी से मन्त्र दीक्षा प्राप्त करके कुछ समय के बाद आप नैमिषारण्य आ पहुँचे।

और नैमिषारण्य में ऋषियों को जल की असुविधा देख कर आपने भूमि पर चक्र छोड़ा जिससे वहाँ पर तत्काल एक कुण्ड बन गया। उसमें से जल निकलने लगा। उसका नाम चक्र तीर्थ है। यहाँ पर हर अमावस्या को मेला भी लगता है।

नैमिषारण्य में बहुत काल तक निवास करके फिर आप मथुरा आगये। यहाँ गिरिराज श्रीगोवर्धन की तरेटी में निवास करने लगे। आपका निवास स्थान आजकल नीमगांव के नाम से प्रसिद्ध है। आपके निवास स्थासन पर अब अच्छा मन्दिर बना हुआ है।

आपने नाना प्रकार के कुतर्कवादियों को अपने प्रबल पाण्डित्य से परास्त करके वैष्णव धर्म की पुनः जागृति करते हुए संसार का बड़ा ही कल्याण किया।

नारायण अस्त न हों इसके पहिले-पहिले मुझे भोजन कराइये (आश्रम पर आये हुए अतिथि का आतिथ्य सत्कार करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य था) यह बात सुनकर ऐसा ही होगा ऐसा कहकर उन्होंने भोजन बनाया किन्तु प्रायः सन्ध्या समय समीप होने के कारण भोजन बनाते-बनाते श्रीसूर्यदेव अस्ताचल को प्राप्त हो गये।

मुनिना ऋषिणा तेन निम्बवृक्षे तदा शुभे ।

स्थापितं तेजसा स्वेन तेजस्तत्त्वं सुदर्शनम् ॥१५॥

तत्तेजः सूर्यसंकासं दृष्ट्वा वेधाः स्मयान्वितः ।

भिक्षुरूपधरं बालं मुनिं सूर्यमिवापरम् ॥१६॥

भा०-मुनिरूप धारी उन महर्षि ने अपने आश्रम के निम्बवृक्ष (नीम के पेड़) पर अपने दिव्य स्वरूप श्रीसुदर्शन तेज को स्थापित किया। ब्रह्माजी, यह देखकर कि नैष्ठिक ब्रह्मचारी मुनि स्वरूप इस बालक के सूर्य सदृश तेज को मानों दूसरे सूर्य के समान ही है, विस्मय को प्राप्त हो गये।

नमाम दण्डवत् भूमौ तपसा तस्य तोषितः ।

उवाच वचनं रम्यं साधु साध्वीति पूजयन् ।

निम्बादित्य इति ख्यातो वसुधायां भविष्यति ॥१७॥

भा०-ब्रह्माजी ने श्रीसुदर्शनावतार मुनि को साष्टाङ्ग दण्डवत् कर प्रिय वचनों से उनकी स्तुति करते हुए बड़ी ही प्रशंसा की और कहने लगे कि निम्बवृक्ष पर आपने सूर्य का प्रकाश दिखाया है, इस कारण संसार में आज से आपका “निम्बादित्य” (निम्बार्क) यह नाम प्रसिद्ध होगा।

॥ इति शुभम् ॥

प्रकाशन सेवा--

स्व० श्रीगिरधरगोपाल छापरवाल , कुचामनसिटी
की
पुण्य स्मृति में

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र
जिला-अजमेर (राजस्थान) 305815
फोन नं. 01497 - 227831 कार्यालय
फैक्स नं. 01497 - 227921